कोई लाख बुराई कर ले | By Sanjay Chauhan |

कोई लाख बुराई कर ले
चाहे झूठ से दामन भर ले
अरे मन, सच को आंच न आवे

झूठ के दम पर महल बनाया
निर्धन को तूने कितना सताया
फिर भी समझ न पाया
अरे मन, सच को आंच न आवे

कोई लाख बुराई कर ले
चाहे झूठ से दामन भर ले
अरे मन, सच को आंच न आवे

बुरा किसी का करने वाला
खुद भी भलाई कैसे पाता
कौन ये तुझको बतावे
अरे मन, सच को आंच न आवे

कोई लाख बुराई कर ले
चाहे झूठ से दामन भर ले
अरे मन, सच को आंच न आवे

दूजों को दु:ख देने वाला
खुद भी तो सुख कैसे पाता
उसको चैन न आवे
अरे मन, सच को आंच न आवे

कोई लाख बुराई कर ले
चाहे झूठ से दामन भर ले
अरे मन, सच को आंच न आवे

सच्चा इंसान वो है जग में
दया-धर्म है जिसके मन में
उसको कौन सतावे
अरे मन, सच को आंच न आवे

कोई लाख बुराई कर ले
चाहे झूठ से दामन भर ले
अरे मन, सच को आंच न आवे

जिसका कोई न है सहारा
उसका हरी ही है रखवाला
वो भव पार लगावे
अरे मन, सच को आंच न आवे

कोई लाख बुराई कर ले
चाहे झूठ से दामन भर ले
अरे मन, सच को आंच न आवे

अंत समय तू हरी गुण गा ले
अब तो मनवा बिगड़ी बना ले
हरी दर्शन तो पाए
अरे मन, सच को आंच न आवे

कोई लाख बुराई कर ले
चाहे झूठ से दामन भर ले
अरे मन, सच को आंच न आवे

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%95%e0%a5%8b%e0%a4%88-%e0%a4%b2%e0%a4%be%e0%a4%96-%e0%a4%ac%e0%a5%81%e0%a4%b0%e0%a4%be%e0%a4%88-%e0%a4%95%e0%a4%b0-%e0%a4%b2%e0%a5%87-by-sanjay-chauhan/